श्रीहनुमत्-शतकम्



अवनितनयापीडादुःखहरम्
नीचरवृन्दसुनष्टकरम् ।
प्रभुरामपदं
मामि प्रभो शिवजं सुखदम् ।।

रामनारायण पाण्डेयः

श्रीहनुमत्-शतकम्

विद्यावते संस्कृतसाय तुभ्यं,
सौभाग्यशीलाय गुणाकराय।
सत्यव्रताय शुभदाय महोदयाय
समर्पयेऽहम् शतकमिदं शुभम्,
रामनारायणः

रचयिता

रामनारायण पाण्डेयः

विमलेश :

विहार प्रशासनिक सेवा (से० नि०)

प्रकाशक :

अभिषेक प्रकाशनम्, शास्त्रीनगर, कानपुर

HANUMAT-SHATAKAM

By

Ram Narayan Pandey

पुस्तकस्य नाम – श्रीहनुमत्-शतकम्

रचयिता – रामनारायण पाण्डेयः

विमलेशः

प्रकाशकः – अभिषेकप्रकाशनम्

११७/८१ क्यू शारदानगर, कानपुर–२०८०२

मुद्रकः – शारदा प्रेस

११७/८१ क्यू, शारदानगर, कानपुर–२०८०

मूल्यम् – पञ्च रूप्यकाणि

समर्पणम्

परम पिता जी स्व० चन्द्रिका पाण्डेय, वैद्य जी

एवम्

महामहिमामयी करुणामयी माता जी स्व० भोलादेवी

को

सादर

समर्पित

रामनारायण पाण्डेय

'विमलेश'

प्ररोचना

मेरे पूज्य पिताजी, स्व० चन्द्रिका पाण्डेयजी बहुत उच्च कोटि के विद्वान् और बड़े लोकप्रिय वैद्य थे। धर्मानुरागी तो थे ही रामचरितमानस के बहुत बड़े प्रेमी थे।

इसलिए मुझे अक्षर ज्ञान होने के बाद से ही प्रतिदिन शाम में लालटेन जलाकर रामचरितमानस का सुन्दर कांड पढ़वाते थे। विनोद-प्रियता के कारण मेरी अबोधता और अज्ञानता का आनन्द लेने के लिए वे चौपाइयों के अर्थ भी मुझसे पूछते थे। जब मैं अर्थ का अनर्थ कर डालता था तो वे खूब खिलखिला कर हंसते थे और पास बैठे लोगों से भी मेरे अर्थ का उल्लेख करते थे। मान-अपमान का बोध होने की उम्र मेरी न थी, न तो यह ही समझने की क्षमता थी कि वे मेरी अज्ञानता पर हंस रहे थे या मेरे बाल-सुलभ भोलापन का आनन्द ले रहे थे। मैं मात्र यही समझता था कि मैं जो कहता था उससे वे बड़े प्रफुल्लित और प्रमुदित हुआ करते थे। आज भी स्मृति-पटल पर हनुमानजी के लंका गमन के संदर्भों की बातें याद कर रोमांच भी होता है, सिहरन भी और कभी-कभी स्पंदन भी। मुझे अभी भी खूब ठीक से याद है-"कनक कोट विचित्र मणि-कृत सुन्दरायत अतिघना"। इसका अर्थ पिताजी की आज्ञा से जब मैं कर रहा था तो न मुझे 'कनक' का ज्ञान था न 'कोट' का। मात्र इस शब्द को कनक कोट के (कानककोटना) अर्थ में उस समय मैं समझता था आज भी मुझे हंसी आती है और तब परमपूज्य बाबूजी की हँसी का कारण मुझे समझ में आता है। १९४५ में पिताजी के निधनोपरान्त मेरे ज्येष्ठ, भ्राता पं० जगन्नाथ पाण्डेय "वैद्यजी" इस क्रम को चालू रखे। वे भी धर्मानुरागी हैं और कर्मकाण्ड एवं आयुर्वेद का अच्छा ज्ञान रखते हैं।

अतः बाल्यकाल से ही हनुमानजी की निष्ठा, भक्ति, अनन्यता, वाक्-चातुरी, संभाषण-कुशलता एवं अद्भुत, अलौकिक तथा अतुलित बलज्ञान और सामर्थ्य से मैं बहुत प्रभावित और आकर्षित था।

अक्टूबर, १९६६ में मेरी पदस्थापना प्रथम श्रेणी के दंडाधिकारी ने रूप में बिहार के रांची जिले के खूंटी अनुमंडल में हुई। तब, अब जैसी प्रशासनिक विषमतायें न थीं। अपराध कम होते थे इसलिए न्यायालय का कार्य बोझ काफी कम था। समस्यायें कम थीं इसलिए अन्य विविध कार्य भी यदा-कदा ही मिलता था। अर्थात् पूर्णकालिक व्यस्तता नहीं रहती थी। बचे हुये समय में पढ़ने-लिखने के अलावा समय काटने लायक न कोई आदत थी, न व्यसन।

पूजा की परम्परा विरासत में पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिली थी। पूजा का समय काफी मिलता था लेकिन पूजा करने की पुस्तकें या अन्य साधन नगण्य थे। आदिवासी बाहुल्य के कारण मार्गदर्शक पंडित भी उपलब्ध न थे इसलिए पूजा के लिए जितना समय उपलब्ध था उतनी पुस्तकों की कमी के कारण पूजा से मन नहीं भरता था।

सरकारी सेवक होने के नाते सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्कृष्ट सेवक से मन और मस्तिष्क का लगाव सर्वाधिक था। अतः मन में यह बात आयी कि भक्तशिरोमणि हनुमानजी के चरणों में नित्य नवीन एक छन्द-शब्द-पुष्प चढ़ाऊँ। मनुस्मृति में पढ़ा था कि दूसरे की बनायी स्तुति से अधिक प्रभावकारी अपने शब्दों में कही हुई बात होती है। इस प्रकार एक-एक छंद सर्वाभीष्टदायक हनुमानजी की अनुपम-असीम कृपा से चढ़ने लगा। इच्छा थी मात्र एकादश छन्दों की स्तुति प्रस्तुत करने की। जब मैंने इस प्रयास से खूँटी अनुमंडल के तत्कालीन विधिविदों (अधिवक्ताओं) को अवगत कराया तो श्री के० एन० शर्मा, श्री शिवावतार चौधरी, श्री के० के० तिवारी तथा अन्य कई लोगों ने मुझे प्रोत्साहित किया और लिखते जाने का अनुरोध किया और क्रम आगे बढ़ता गया।

बाल्य-काल में ही लोकाभिराम, नयनाभिराम, ज्ञान-विज्ञानाग्रगण्य हनुमानजी का भगवान् भुवन भास्कर के पास पहुँचने का अद्भुत, अलौकिक कौतूहल जिसने सारी सृष्टि को आश्चर्य के प्रशान्त महासागर में डूबो दिया था, मेरे लिए जितना ही जिज्ञासु था उतना ही रोचक। जितना ही दुरूह था उतना ही गहन। क्योंकि जब से सृष्टि बनी तब से इस घटना के दिन तक कोई जीवधारी सूर्यलोक जाने का दुःसाहस नहीं कर पाया था। यह एक ओर तो सर्वोच्च पराक्रम की पराकाष्ठा थी, दूसरी ओर भगवान् भुवनभास्कर जो अखिल भुवन को प्रकाशित करते हैं, को अन्धकार में ढकेल देने का अद्भूत, अप्रतिम एवं अभूतपूर्व सत् प्रयास। जो बात मेरे मन को निरन्तर झकझोरती रहती थी वह यह कि भगवान् सूर्य के प्रथमातिथि अंजनीनन्दन-केसरी कुमार थे और इसके पूर्व किसी प्रकार के अतिथि सत्कार का कोई पूर्वानुभव भगवान् सूर्य को नहीं था। न तो उनके अड़ोस-पड़ोस में ही कोई था जिससे वे अतिथि सत्कार की सहायता मांगते। मेरे मन में आयी इन बातों का उत्तर स्वयं पवनकुमार देते गए लेकिन इन दोनों देवताओं का संवाद सरकारी सेवा में व्यस्त रहने वाले एक सेवक के लिए भारी पड़ता गया—क्योंकि विलम्ब होता गया। इसी बीच मेरा स्थानान्तरण गिरिडीह हो गया। वहाँ के तत्कालीन अनुमंडल पदाधिकारी, श्री सी० एन० झा जी एक कुशल प्रशासक ही नहीं, बड़े धर्मानुरागी एवं बड़े पुजारी

थे जो सम्प्रति कृषि उत्पादन आयुक्त हैं, ने मुझे काफी प्रोत्साहित किया और बहुत से मूल्यवान् सुझाव भी दिये।

तब धर्मानुरागियों ने मुझे प्रेरित किया कि मात्र शतक का रूप न देकर 'हनुमच्चरितम्' के रूप में सम्पूर्ण जीवन को प्रकाशित किया जाय। साथ–साथ हिन्दी में स्तुति लिखी जाय। वह भी छपने के लिए तैयार है। इसी प्रयास में काफी विलम्ब होता गया जिसका अपराधबोध मुझे होता गया। लेकिन संस्कृत के उपयुक्त मुद्रण की व्यवस्था पटना में न रहने के कारण और मेरी अपराजेय विवशताओं के कारण बिलम्ब होता गया जिसके लिए क्षमा माँगने के लायक शब्दों का अभाव अनुभव कर रहा हूँ। फिर भी क्षमार्थी हूँ।

भक्तिमति, धर्म परायणा मेरी पत्नी, श्रीमती विमला पाण्डेय ने काव्य रचनाओं में जिस प्रकार का सहयोग और प्रोत्साहन मुझे दिया है, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। छन्द रचनाओं में जब कभी गाड़ी फँसती थी तो उन्हें ही सुना–सुना कर उनके मूल्यवान् सुझावों का पालनकर मैं आगे बढ़ता था। उनके सहयोग की समुचित सराहना के बिना आभार पूर्ण मेरे साभार भाव अपूर्ण रहेंगे।

मैं बिहार के संस्कृत संजीवन समाज के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व० सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी वर्तमान अध्यक्ष, श्री बी० एन० ओझा, महासचिव डा० शिववंश पाण्डेय, तत्कालीन कोषाध्यक्ष श्री जयनन्दन झाजी, श्री भगवति शरण मिश्र, डा० मिथिलेश कुमारी मिश्र तथा पटना जंकशन के हनुमान मन्दिर के सफलोद्धारक आचार्य श्री किशोर कुणाल, भारतीय प्रशासनिक सेवा के सर्वश्री अरुण पाठक, टी० सी० ए० श्री निवास रामानुजन, जे० एन० त्रिपाठी, ए० के० पाण्डेय एवं एन० एन० पाण्डेय, के० पी० पाण्डेय (वि० प्र० से०) के प्रति काफी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित भी किया और आशीर्वाद भी दिया। प्रो० डा० नन्दकिशोर तिवारी सम्वाराम के बहुमूल्य सुझावों के लिए काफी कृतज्ञ हूँ। डा० मिथिलेश कुमारी मिश्र ने नवप्रभातम् मुद्रणालय, कानपुर से सम्पर्क कर मुद्रण कार्य में जो सहयोग दिया उसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ। डा० श्री शिवबालक द्विवेदी जो इस प्रयास को मुद्रण कार्य का पर्यवेक्षण कर साकार रूप देने में लगे हुए हैं उनके लिए स्वयं केसरीकिशोर से मैं प्रार्थना करता हूँ।

गीता मन्दिर आश्रम न्यूयार्क अमेरिका के मुख्य पुरोधा परम पूज्य स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने पुस्तक के मुद्रण में जो रुचि ली और जो प्रोत्साहन दिया वह वन्दनीय है, श्लाघनीय एवं स्तुत्य है।

विश्वास है, भक्तगण एवं विद्वद्गण इस पुस्तक की काव्यगत त्रुटियों पर दृष्टिपात न कर रामरसिक प्रभंजन पुत्रशंकरसुवन केशरीनन्दन रामदूत हनुमानजी के चरण-कमलों के इस प्यासे भँवरे का शब्द-पुष्प स्वीकार कर अनुगृहीत करेंगे। यह कहते हुए भी सल्लजता का अनुभव कर रहा हूँ क्योंकि ये शब्दपुष्प भी प्रभु के ही हैं। उन्होंने कृपापूर्वक यह शब्द पुष्प रखने का सौभाग्य इस सेवक को दिया है। जगन्नियंता भक्त शिरोमणि श्री रामदूत हनुमान हर पाठक को सपरिवार सुखी एवं सानन्द रखें-यही प्रार्थना है।

स्वान्त: सुखाय लिखा गया यह शतक भक्त एवं सुधी पाठकों को प्रिय लगा तो मेरी सेवा सार्थक होगी।

अंत में,

रामेण घनश्यामेन, य: स्तुत: स्वभक्त्या।
ह्रीतोस्मि सर्वथानाथ किं त्वं स्तूयसे मया॥
यदिदं शब्दपुष्पंमे समर्पितम् पादपंकजे।
नेदंमम त्वदीयं ते किं त्वम् स्तूयसे मया॥
मंदेन मया प्रोक्तं पिता-माता तथा गुरु:।
तवापमानघोरेदम् हे नाथ ! क्षमस्व मे॥
राम सराहत जासु, गुण गावत मुनि यश-गान।
सकल सिद्धिदायक सुभग, वायुतनय हनुमान।
सियावर रामचन्द्र की जय॥

-रामनारायण पाण्डेय
(विमलेश)
~~लाली भवन कैम्पस~~
206, नेहरूनगर
पटना-१३ विहार (भारत)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीशिवाम्बिकाभ्यां नमः

श्रीअनिलाञ्जनिभ्यां नमः

श्रीरामदूताय नमः

श्रीहनुमत्-शतकम्

प्रणम्य सीतापतिरामचन्द्रं
उमासुतं तत्सहितं महेशम् ।
संस्मृत्य वाणीपदमोदभवौ ततः
प्रारंभयामि चरितं पवनात्मजस्य ॥१॥

प्रासूय या वै जगवंदिता त्वाम्
देवैः स्तुता पुत्रसुतेन नित्यम् ।
सत्कीर्तिगाथां तनयस्य तस्य
लिखामि माता सफलीकरोतु ॥२॥

मा हसतु दृष्ट्वा मम मूर्खता या,
नाऽहं कविर्ज्ञाता वा न धीमान् ।
कीशेश – पद – पङ्कजषट् – पदोहम्
तस्याब्जचरणस्य हि लुब्धलोलुपः ॥३॥

पिपीलिका ह्यम्बुधिमन्थनं यथा
खलु मक्षिकायाः नभमापनं च ।
कृपाबलेनैवावगाहनोत्सुको
भवदीयमहिमाब्धितटे तथाऽहम् ॥४॥

अङ्गीकृतवान् हरिरूपं यद्यपि कर्पूरगौरम्
सचिवत्वमपि रवितनयस्याभवत् रामहेतोः ।
सीतारामामृतं पातुं यः पिपासुरजस्रम्
वन्देऽहं तं जगत्पितरं रामदूतं कपीशम् ॥५॥

यं विधिशम्भुसुरेन्द्रसोमरवयः स्तुन्वन्ति वेदाश्चयं
सत्कीर्तिं गायन्ति यस्य विपुला देवासुराः किन्नराः ।
तं श्रीराम – पदारविन्दनिरतं साफल्यहेतुं परं
श्रीरामेण प्रशंसितं शिवसुतं प्रीत्याञ्जनेयं भजे ॥६॥

सृष्टिं सृजति विरञ्चिर्यस्य कृपया मृत्युञ्च मृत्युञ्जयः
नागं धारयते क्षितिं च नुदति सततं सुवायुर्वरः ।
भासयते शुचिभास्करश्च वरुणः वह्निः शशाङ्कस्तथा
त्रेतायां विहितः ऋणीच सोऽपि धन्यः सुवायोः सुतः ॥७॥

नमामि नित्यं श्रीरामदूतं,
भजामि नित्यं तन्नामश्रद्धया ।
पठामि नित्यं हनुमच्चरित्रं
पिबामि तन्नामसुधां च नित्यम् ॥८॥

वसन्ति रामानुज – राम – सीताः
यस्योरसि राजते नान्यदेवः ।
जितेन्द्रियं शोकविनाशकारकं
नमामि शिरसा तं रामदूतम् ॥९॥

गतिर्यस्य रामः, मतिर्यस्य रामः
रामं सदा पश्यति च यः ।
श्रीरामनामाऽमृतं पिबति यः
पूज्यः सुधन्यो भक्तो हनूमान् ॥१०॥

महाबली महोत्साही कपीशो वातनन्दवः ।
सङ्कटतमोनाशकः मार्तण्डः सुप्रभाकरः ।।११।।

सीतानुजयुक्ता रामः, मानसे यस्य राजते ।
ममोरसि तिष्ठतु सः,कपीनां कपिपुङ्गवः ।।१२।।

चामीकरनिर्मिता लङ्का येन श्मशानीकृता ।
शोकमुक्ता कृता येन सीता सः मे पिता तथा ।।१३।।

शूराणान्तु महाशूरः कवीनां कविपुङ्गवः ।
भक्तानान्तु महाभक्तो हरीणां हरिपुङ्गवः ।।१४।।

भूतवैतालिकाबाधा रोगा विविधा तथा ।
नश्यन्ति स्मरणमात्रेण नात्र किञ्चिद्धि संशयः ।।१५।।

यस्य स्मरणं नूनं रामस्य दर्शनं परम् ।
शतशः प्रणामाः विलसन्तु तेषु पादाम्बुजेषु च।।१६।।

रामस्य दर्शनं नास्ति विना यस्य च आज्ञया ।
तस्य भजनप्रभावेण निश्चिन्ताः सन्ति मानवाः ।।१७।।

यस्य भक्तिप्रभावेण तुलसी मुक्ति प्राप्तवान् ।
अपश्यत् राममयं लोकं काननमयं च दृष्टवान्।।१८।।

गायन्ति गाथां तव सद्गुणस्य
वाणीं प्रभुश्च त एव भूतनाथः ।
भक्तिस्त्वदीया अतिश्लाघनीया
त्वमेव धन्यः सुतशंकरस्य ।।१९।।

ज्ञानाकराय बलबुद्धि-निकेतनाय
मङ्गलकराय दिव्याय जितेन्द्रियाय ।
पूज्याय भव्याय च सौम्यकायाय
नमामि सततं पवनात्मजाय ।।२०।।

अञ्जनिसुताय प्रबलाय सुपूजिताय
रघुपतिप्रियाय सुग्रीवहिते रताय।
भद्राय शुभ्राय गुणाकराय,
नमामि सततं वातात्मजाय ॥२१॥

विपन्नराणां शुचि सेवकानां
निजाश्रितानां परमाश्रयो भवान् ।
पवनप्रियं पावनं पावनानां
नमामिधीरं वरवानराणाम् ॥२२॥

कीशेशं करुणाकरं गुणनिधिं
कल्याण – सौभाग्यदम् ।
बुद्धीशं वरदायकं सुफलदं
सिद्ध्याष्टकप्रदायकम् ॥
योगीशं महिमामयं सुखकरं
पवनात्मजं पावनम् ।
वन्देऽहं तं राम – राम – रमणं
वन्दे वरिष्ठं वरम् ॥२३॥

प्रभु-पद उर धारी मोहतमोध्वंसकारी
अतुलित-बलधारी वज्रधरब्रह्मचारी ।
सुरनरहितकारी यस्य जनकः पुरारी
सः जयति अघारी, कीशकंजस्तमारी ।२४॥

सिय-लषण –पुजारी राम-आह्लादकारी,
गुण-गुण-अधिकारी वीरश्रेष्ठो ऽसुरारी
प्रशंसति यं खरारी कामरिपु पन्नगारी।
मुनिमवसुविहारी अञ्जनीजं अघारी ।२५॥

लसति ललामा चारुवामा धराजा
शिव उरसि मरालं रमाकान्तं सुसंतम्।
न शोभते कोऽपि सुरो यथाऽयम्
चरणारविन्दे रतवातजातम् ॥२६॥

रंकः कलङ्कः परदर्शनातुरो,
दीनो विहीनः परभक्तियुक्तः।
भवदीयचरणं शरणमशरणी
श्रुत्वा इदं तच्चरणं भजामि ॥२७॥

सिद्धिस्तस्य बलं तस्य श्रीर्विद्या विविधाश्च याः।
संकटानि च नश्यन्तु यस्य त्राता कपीश्वरः ॥२८॥

ध्यायेत् वातात्मजं नित्यं मनसा वाचा सुकर्मणा
किं कुर्वन्ति बाधाश्चःक्लेशाश्च विविधाश्च ये॥२९॥

करुणानिधानं बल – बुद्धि – धाम,
महिमानिधानं ज्ञानाकाराञ्च।
वरवानरेशं तं मारुतिञ्च
श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥३०॥

अवनितनया – दुःखकष्टहरम्,
रजनीचर – वृन्दसुनष्टकरम्।
सततं निरतं श्रीराम – पदं,
प्रणमामि प्रभो शिवजं सुखदम् ॥३१॥

यदि नास्ति पापं नाघं न दुष्कृतं
न चापि मिथ्याचरणं च धर्मम्।
भवदीयनाम हनुमन् किं वा
पापापहारी च सुधर्मचारी ॥३२॥

कविता ह्यप्राणा अरसा निरर्था
न गायति या श्रीरामगाथा ।
सा नापि कविता स्वल्पा सुज्ञेया
अभूषिता या पवनात्मजेन ॥३३॥

श्रमर्चना शिवसहितेन यत्र
प्रतिष्ठिता भूतनया शिवा च ।
यत्रैव पद्मोद्भव – पार्वतीजौ
तत्राच धाम पवनात्मजस्य ॥३४॥

तत्रैव काशी मथुरा ह्ययोध्या
प्रयाग–काञ्ची–रम्याऽवन्तिकाश्च ।
तत्रैव तीर्थानि विराजन्ते
यत्रैव रमते श्रीराम–दूतः ॥३५॥

अतीव दिव्यं श्री अञ्जनीसुतं
स्वर्णाभभव्यं हर्षाननञ्च ।
रामस्य पद– पङ्कज – चञ्चरीकं
नमामि सुरवदितवानरेशम् ॥३६॥

बाल्ये प्रकाशं हृतवान् भुक्त्वांशुमाली
लोकत्रये च राज्यमभवत् सुतमसः ।
श्रुत्वा स्तुतिं देवैरार्त्तं – क्लान्तां,
हृतवान् कष्टानि रविमुक्तं कृत्वा॥३७॥

स्तुवन्त्यनेके सुस्वराः विहङ्गमाः
कंजाञ्जलिम् अर्पंति कंजनाथः।
मंदानिलं धावति चन्दनं युतं
चरितश्रेष्ठ कपिपुङ्गववीरश्रेष्ठः ॥३८॥

प्रबन्ध – पूर्णो हरि – पूजवस्य,
उड्डीयमाना नव – पुष्पगन्धाः ।
नदन्ति उच्चार्चन – घण्टकानि
उत्तिष्ठ भक्त्यम्बुधि-पूर्ण-चन्द्र ॥३९॥

अत्युत्सको दर्शन – हेतु – कल्भषं
तथाऽधीरा नक्षत्र – राशयः ।
भयातुरास्ते प्रभु –भास्करोदयात्,
उत्तिष्ठ रवि-भक्षक-भक्तत्राता ॥४०॥

निशा गतं शर्वरिनाथ हे प्रभो
प्रभाकरो भूषितसिन्दूराभया ।
ध्यायन्ति भक्ताः पवनात्मजं प्रियं
हे वानरेश तव सुप्रभातम् ॥४१॥

यो ज्ञाति–वनिता – विधुरूपकेवलं
मातृस्वरूपा न चान्यरूपा ।
शफरीध्वज –मोचन – वायुनन्दनः,
तव सुप्रभातं भो वातजात ॥४२॥

पीत्वा सुस्वेदं मकरी सगर्भा,
श्रुत्वा निनादं बहुगर्भस्रावः ।
न कोऽपि लोके तव तुल्ययोद्धा
तव सुप्रभातं मकरध्वजपिता ॥४३॥

केवलं रसज्ञो भक्ति – रसस्य
एवं गुणज्ञो सुत – शंकरस्य ।
त्वमेव धन्यो हरिप्रिय ह्यनन्यो
महाबलिष्ठस्तव सुप्रभातम् ॥४४॥

सतीशः

स्वयं कपीशो जनकः सदोशः
तथा च स्वामी श्री जानकीशः।
वैरी जगत् -ख्यात - मंदोदरीश
उल्लंघितो येन प्रथमः नदीशः॥४५॥

हुताशने हेमपुरीं निमग्नग्ना
दृष्ट्वा निमग्ना म्लेक्षाः समुद्रे ।
विलोक्य कीडामनिलानिलजभ्या
व्रीडायुता रावणम्लेक्षमण्डली॥४६॥

वदन्ति लंकेश्वर - कुम्भकर्णौ
तथा च मघवाजितमेघनादः।
न वर्त्तते हनुमत् --तुल्य -योद्धा
महाबली संयतवोर --श्रेष्ठः॥४७॥

ज्ञात्वा प्रसन्नो ह्यत्यूर्म्मिमाली
गमिष्यति लङ्कां वायुनन्दनः ।
आह्लादितः पादप्रक्षालनेच्छया
अभवत् तु सः किं नभमार्गगामी ॥४८॥

दृष्ट्वा स्वतनयां म्लेक्षेनापहृतां
धृतवान् सुछायां चोरसि श्रीपिता।
अत एव त्यक्त्वा जलधीशमार्गं
लङ्कां जगाम चासौवैपितृमार्गात्॥४९

धरणि - सुताऽशोके शोक-विह्वला
हुताशनं याचति मृत्युबीजम् ।
तस्मिन् क्षणे वायुसुतेन वृक्षात्
निपातिता श्रीरामस्य मुद्रिका॥५०॥

विलोक्य सहसा श्रीराममुद्रिकां
सीता सभीता चकिता सशंकिता ।
तस्मिन् क्षणे भूतनयां प्रणम्य
दूतोऽस्मि रामस्यावदत् समीरजः ।।५१।।

दृष्ट्वा धराजां प्रफुल्लितां तदा
लज्जावनम्रा क्षिन-केतकी-लता ।
धन्योऽसि त्वं वै श्रीराम – दूत
विश्वासपात्रस्त्वं प्राह जानकी ।।५२।।

शृणु त्वं कपीशः ते नाम लोके
जदवा च श्रीधाम सुलभोऽधमापि ।
नव – निधेरष्टसिद्धेश्च दाता,
भविष्यसि पुत्र युगे युगे त्वम् ।।५३।।

धन्योऽसि धन्योऽसि त्वं वायुनन्दन
धन्यास्त्वदीया वरवीरता च ।
धन्यानुरक्तिः श्रीराम – चरणे,
कण्ठावरुद्धा ह्यवदच्च सीता ।।५४।।

अनुगृहीतोस्मि तव वत्स भूरिशः
ब्रूहि वरं यं यमिच्छसि त्वम् ।
वद कः प्रियो मे तव तुल्यमत्र
रामस्य कुशलं तु श्रुतञ्च येन।।५५।।

रामस्य कृपया भवदीय –दर्शनम्
ममात्र किञ्चिद् नहि अम्ब पौरुषम्।
अहं कृतार्थो भवदीयदर्शनात्
शक्तिस्वरूपा ज्ञाता हि सर्वैः ।।५६।।

देहि वराम्बे ! यदि त्वं प्रसन्ना
भक्ति ललामां रामामकामाम् ।
अनुजेन सहितमधुना त्वया सह
रामस्य वासं हृदये मदीये ।।५७।।

तथास्तु चोक्ता श्रीरामभार्या,
आशीषयामास श्रीरामदूतम् ।
सहितेन भ्रात्रा एवं मया सह
मम नाथवासः हृदये त्वदीये ।।५८।।

जानामि रामं नयनाभिरामम्
जानामि रामं लोकस्याधारभूतम् ।
जानामि रामं कालस्य कालम्
जानामि रामं स्वहृन्मरालम् ।।५९।।

सत्यं वदामि तव नाम लोके
भवितास्तु पोतं तव भक्तिसागरे ।
विश्वेश विश्वास – त्राता त्वमेव
भविष्यसि त्वं च युगे युगे सुत ।।६०।।

प्राप्याशीषं जनकसुतायाः रामचन्द्र-प्रियाया
याच्ञा चिह्नं देहि शीघ्रं रामपरितोषणाय
श्रद्धासिक्तः श्रवं नीत्वा आश्वासयित्वा धराजां
हृदये धृत्वा चरणकमलौ अत्यजत् हेमनगरीम् ।६१।।

दीनानां दुःखतप्तानां आधारः को नु रक्षकः ।
म्लेच्छाणां च संहर्ता सर्वाशुभविनाशकः ।।६३।।

कस्य यशः प्रभावाश्च अक्षुण्णाश्च युगे युगे ।
रामस्य प्रियपात्रः कः संकटमोचनसंज्ञकः ।।६२।।

सेवकानाञ्च मूर्धन्यः सेवाधर्मपरायणः ।
भक्तानां सुश्रेष्ठः कः सीतापतिवत्सलः॥६३॥

नान्यः रामदूतः सः दीनानां परिपालकः ।
रक्षको दुःखतप्तानां ज्ञानिनां च महात्मनाम्॥६५॥

रामः रामस्य रूपेण नाविरभूंच्च भारते ।
किन्तु हनू-स्वरूपेण हनुमत् तत्र वर्तते॥६६॥

तस्य कीर्तिकथाकथने समर्थः कः भूतले पुमान्?
यस्य कीर्तिः श्रीरामस्य प्रियया भूरिवर्णिता।६७॥

प्राणेश्वरी प्राणं रक्षति कथं
किं जीवति कथयतु तत्र मे प्रिया ।
कथमगच्छस्त्वं तात तत्र
उल्लंघ्य सलिलेशस्याम्बुराशिम्॥६८॥

श्रृणु सीतायाः सुकृपा – निधानः
श्रवणंनीयां तु व्यथां – कथां च ।
त्यक्त्वा वपुः स्वर्गं सा गमिष्यति
नानीयतां तां यदि नाथ शीघ्रम् ॥६९॥

यथा रसा निवसति दंष्ट्रमध्ये
कलिका यथा कोमलकंटकाङ्के ।
मृगेन्द्र – कक्षे मृगशाविका यथा
शोकावृता तत्र तथैव जानकी ।७०॥

न सीदति तां यमयातना यथा
कृपानिधानस्यादर्शितं पदम् ।
प्राणान्तपूर्वं ध्रुवमेव दर्शनं
सा जीवतीयं प्रभु – आगमेन ।७१॥

श्रुत्वा प्रियायाः कष्टान्वितां दशां
शोकाकुलो शोकविमोचनस्तदा ।
प्रेमाश्रुपूर्णौ नयनारविन्दौ
दृष्ट्वा व्यथितप्रमथित -कीशयूथः ॥७२॥

शिरसा नतः वायुसुतः तदानीं
रामस्य मुनिदुर्लभपाद-पङ्कजे ।
ललाटोपरिपाणि - कृपा - करस्थ
दृष्ट्वा द्युति हर्षितभूतनाथः ॥७३॥

भवानी पश्येमाम् अद्भुतां द्युतिं
अदृष्टंपूर्वं मुनियोगिभिः पराम् ।
कपेः शिरः पङ्कजपाद-विष्णोः
कराम्बुजश्रीपतेः शोभतेस्म ॥७४॥

प्रातः स्मरामि सविता-सुत-सैन्यश्रेष्ठं
म्लेक्षाक्ष-मघवाजित-मारकेशम् ।
वज्राङ्गवर- वज्रधरः कुजा - प्रियं
श्रीरामदूतं लङ्का-भयंकरम् ॥७५॥

प्रातः स्मरामि सवितावत् रक्तवर्णं
कंजाक्ष-कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम् ।
सिन्दूर-पूर -परिलेपित -चारु-देहं
रक्ताम्बुजाभचरणंशरणमशरणम् ॥७६॥

प्रातः वदामि वचसा पवनात्मजं प्रियं
मङ्गलकरं शोकविनाश - कारकम् ।
धीधैर्यं - शौर्यमतुलं भक्त्याग्रगण्यं
दुःखादिदैन्य नाशकपरं दैत्य।निशेषकम् ॥७७॥

प्रातः स्मरामि रक्ताम्बुजरक्तवर्णम्
कंजाननं सुविमलं कंजेशशिष्यम् ।
श्रीराम-सौमित्र - जकात्मजा प्रियम्
गिरिजेशतनयं पवमाननन्दनम् ॥७८॥

प्रातः स्मरामि मनसाञ्जनरञ्जनं तं
बालार्करम्याअरुणोत्पल - सुलालमम् ।
आज्वल्य - ज्वालारुण - वह्निसन्निभम्
ज्नकात्मजार्तिहरणं सुरार्चितं च॥७९॥

यस्यांशुं दृष्ट्वा तिमिरान्तनिश्चितं
प्रकाश्यते यः भुवनं चतुर्दशम् ।
मरीचिमाली सः प्रभाविहीनः
दृष्ट्वा त्वदीयं प्रभुबाल-केलिम्॥८०॥

न प्रकाशपुञ्जः न तु तेजराशिः
आश्चर्यं - तिमिराच्छन्नः स सूर्यः ।
कोऽसौ समर्थो निकटागमे मे
विचिन्त्य चिन्तामग्नो दिवाकरः॥८१॥

ध्यानाब्धिमग्नो जातो यदा रविः
अकेन्द्रितञ्च तस्यास्थिरं मनः ।
अत्यद्भुतोऽयं सुचमत्कृतोऽयं
अज्ञातः कोऽयं च पृच्छामि कमहम् ॥८२॥

स्वर्गे च विष्णुः ब्रह्मा स्वलोके
शिवः हिमाद्रे मघवा सुर - गृहे ।
कः सक्षमः आगमनेऽन्यथात्र
विचारमग्नः सूर्यः सुचिन्तितः ॥८३॥

पुनः पुनः ध्यायति सः तमारी
उमापतिञ्च विष्णुं प्रजेशम् ।
एकादशं रुद्रं तं ददर्श
हर्षोत्फुल्लो भूतः कविः रविः ॥८४॥

आसृष्टि ह्यधुना प्रथमागतोसि
वातानुकूल–वातात्मज–देहधारिम् ।
समातपोत्ताप – सहिष्णु – जिष्णुः
प्रसन्नता–वारिधि–चारु–चन्द्रः ॥८५॥

दृष्ट्वा प्रयासं तवाद्भुतमिदम्
आश्चर्ययुक्ताः चकिताः सुरासुराः ।
त्वमिव त्वमेवासि नान्यो त्रिलोके
किं स्वागतं तें कुर्यामहं बद ॥८६॥

नायं कौतुकं केलिः नो क्रीडा कौतूहलम् ।
बुभुक्षा पीड़ितः चास्मि आगतः शमनाय च ॥८७॥

दिव्यं गोलार्कं दृष्ट्वा तु रक्तवर्णं सुसुन्दरम् ।
सरसं सुफलं ज्ञात्वा आगतस्तवसन्निधौ ॥८८॥

पीयूषपूरितां वाणीं श्रुत्वा तव मधुमिश्रिताम् ।
तर्कपाण्डित्यपूर्णञ्च तृप्तौ कर्णौ न चोदरः ॥८९॥

शिरसा नमामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यम्
धर्मादिरूपं तमसारि – शाश्वतम् ।
येन विना असृजिता च सृष्टिः
सृजितापि व्यर्था तमसावृता सा॥९०॥

प्रभा – प्रभावः सुप्रभा – स्वभावः
प्रकाशसे त्वम् रविर्भूर्भुवः स्वः ।
उत्तप्ततापः – सुप्रचण्ड – दीपः
मार्त्तण्ड त्वम् सत्यं सृष्टिहेतुः ॥९१॥

किं वर्णयामि दिनमान– सुपूज्यमानं
अस्पृश्यदृश्यम् , चासृष्टिराद्यः ।
धर्मैकता – मंच – विरंचि – वंदितः
प्रणमामि किं कथयतु इयान् ज्योतिः॥९२॥

त्वमादिदेवो ह्यरुणः प्रभाकरः
सप्ताश्वहरिदश्व – हिरण्यरेता ।

विज्ञावकेन्द्रः — निशान्तकारकः
मङ्गलकरोऽर्तिहरः गुणाकरः॥९३॥

सौन्दर्यं त्वम् हि सृष्ट्या धरित्र्याः
वदान्यकः प्राणदो द्वादशात्मा।
किं दुर्दशां याति त्वया विना विभो
सम्पूर्णसृष्टिः वसुधा विशेषतः ॥९४॥

असंभवम् आगमन हि लोके
आसृष्टिमधुना क्षेत्रमनन्तम्।
प्रभञ्जनः मात्र— गतागतश्च
स्तुत्यं प्रयासं भवदीय—केवलम्॥९५॥

परम — प्रसन्नः तव दर्शनेन
श्रुत्वा स्तुतिं भावयुतां समादृताम्।
दृष्ट्वा त्वदीयां ज्ञानाऽगाहतां
पश्यामि उत्कृष्टशिष्यस्य पात्रताम् ॥९६॥

त्वदीया शब्दमालेयं गौरवार्थसमन्विता।
रामनामाङ्कितं दिव्यं तुभ्यमेव समर्पये॥९७॥

सभार्यः सानुजो रामः यस्योरसि च सर्वदा।
गृहाणेदं कृपानाथ! प्रसन्नो भवतु मारुतिः ॥९८॥

अञ्जनी —नन्दनं वीरं सीतार्त्तिहरं प्रियम्।
रामस्याह्लाददातारं संकटमोचनसंज्ञकम् ॥

वामाङ्गे च सुशोभिता शुचिवरा
जनकात्मजा भूमिजा,
मध्ये शोभाधाम रामसुभगः
कंजाक्ष — कंजाननः।

पृष्ठे कैकेयी — नन्दनो हि भरतः
सौमित्रः शत्रुघ्नस्तथा,
रामस्य पद — पङ्कजस्य तत्र
सेवा 'हनु' प्राप्तवान् ॥९९॥

भ्राता च त्राता च माता–पिता मे
सुहृत् सखा संकटहरो गुरुः कः।
नान्यः कपीशः श्रीराम – दूतः
सर्वस्वं मे च स हि ज्ञानदाता॥१००॥

मंदेन मया प्रोक्त. पिता नाथः तथा गुरुः।
तवापमानं घोरेदं हे नाथ! क्षमस्व मे॥१०१॥

श्रीराम –पद – पंकज – भृङ्गराज
एवं कृपा –भाजन – भूमिजायाः।
अञ्जनि – हुलासकर – ज्ञानवान्
चित्तमस्ति मे तव पाद–पङ्कजे॥१०२॥

हे! हे! सुतप्तकनकोत्ताम – कान्तिकान्तः,
हे! हे! सकल –क्लान्ति – विनाशदक्षः।
चिन्ताहरः शान्तिकरः सुध्येयः
हृदयेश तव पादयुगं नमामि॥१०३॥

नमामि रामसेवकं भजामि कीश – नायकम्।
अभीष्ट-सिद्धि–दायकम् नमामि भक्त- रक्षकम्॥१०४॥

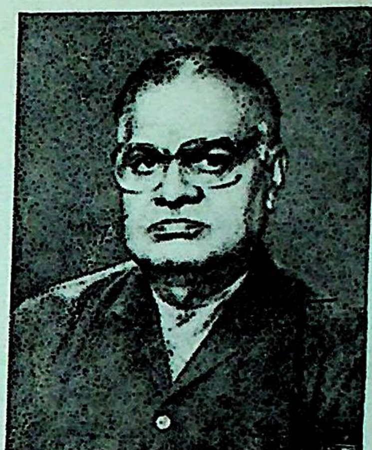
भवन्तु अर्थागमः सज्जनागमः
शान्त्यागमः एवं भक्ति–आगमः।
परिवारे सर्वे सुखिनः निरामयाः
प्राप्नोमि भगवद्भक्तिमनुक्षणम्॥१०५॥

उद्यद्भानुसहस्रकोटि - सदृशंमलयाद्रिहस्ते स्थितम्
ब्रह्मा-विष्णु-सुरेन्द्र-मारुतप्रियं सीतार्तिहर्ता वरम्।
रामारविन्दमिलिन्दभक्तसुलभं तत्त्वस्वरूपं शिवं;
सीतारामसुमन्दिरञ्च विमलं वन्दे वरिष्ठं हरिम्।१०६॥

रामेण घनश्यामेन यः स्तुतः स्व – भक्त्या
हीनोऽस्मि सर्वथा नाथ! किं त्वम् स्तूयसे मया॥१०७॥

यदिदं शब्दपुष्पं मे समर्पितं पादपङ्कजे।
नेदं मम त्वदीयं ते किं त्वम् स्तूयसे मया॥१०८॥

कवि-परिचय



नाम-रामनारायण पाण्डेय
उपनाम-विमलेश
जन्म-१३-११-१९३३
स्थान-ग्राम नन्दना, पोस्ट-हाटा थाना-चैनपुर, जिला भभुआ (कैमूर) बिहार।
शिक्षा-बी०ए० आनर्स (मनोविज्ञान) साहित्यविशारद

कार्य-१०-३-१९५८ से बिहार प्रशासनिक सेवा मे ३३ वर्ष सात माह १२ दिन कार्य करने के पश्चात् ए० डी० एम० के रूप में ३१-१०-९१ को सेवानिवृत्त।

रचना-हनुमच्छतकम् - संस्कृत
हनुमत् दोहावली - हिन्दी (मुद्रण के लिए तैयार)
हनुमत् स्तुति - हिन्दी
पुष्पाञ्जलि - कवितासंग्रह
मंत्रमञ्जलि - संस्कृत

श्रद्धाञ्जलयः

१. युधिष्ठिरश्च हनुमान चन्द्रिका, पितामहश्च प्रपिता पिता मे।
प्रणम्य तेषु पदाम्बुजेषु समर्पयेऽहं शतकमिदं शुभम्॥

२. गुरुं केदारनाथं तं स्वर्गस्थं द्विजोत्तमम्।
सपत्नीको नमामि तं देवतुल्यं दयानिधिम्।

३. बलभद्रं शीलभद्रञ्च गोलोके सुशोभि
याचे तस्य चाशीषं स्मरामि क्षणे-क्ष

४. श्रीपते नमस्तुभ्यं तंत्र-मंत्र-विश
यस्याशीर्वादेन सर्वाबाधा विनश

रामना